शोध-मंथन Vol. VII No. 2, 2016 ISSN: (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

स्वतन्त्रता आन्दोलन में संभल एवं अमरोहा का योगदान

संभल

डा0 रीतू त्यागी
एम.ए. इतिहास, पी0एच0डी0
बी–74, गांधी नगर, मुरादाबाद
पिनकोड–244001

भारत के लोगों द्वारा ब्रिटिष सरकार के दमन के शासन को सहन करना बहुत मुष्किल था। अंग्रेजों ने स्थानीय शासकों तथा जनता को कुचलने का भरसक प्रयास किया। इस प्रकार उन लोगों को अपमानित करने और नीचा दिखाने में कोई झिझक नहीं होती थी। भारतीयों को बहुत निम्न कोटि का तथा अभद्र (असभ्य) माना जाता था। हिन्दुस्तानियों को काला कुत्ता या सुअर के नाम से पुकारते थे। इसलिए उनका होटलों, थियेटरों तथा सार्वजनिक स्थानों में प्रवेष निषेध था।[1] उच्च पद गोरों (अंग्रेजो) के लिए आरक्षित थे। इसके अतिरिक्त भारतीयों को उसी कार्य के लिए समान वेतन भी नहीं दिया जाता था, चाहे वह उसी पद या कार्य कर रहे हों जिन पर अंग्रेज करते थे।[2]

भारतीय व्यापार तथा लघु उद्योग धन्धों और खेतीबाड़ी को अंग्रेज नीति के आधार पर नष्ट कर दिया गया और इसलिए साधारण भारतीयों की स्थिति दिनों–दिन दयनीय हो रही थी।[3]

स्थानीय शासकों की पदवियों तथा उनके अधिकारों को इसलिए कम कर दिया गया ताकि वह अपमानित हो सकें। उनके राज्यों को समाप्ति के सिद्धान्तानुसार अन्य अन्यायोचित ढ़ंग से ब्रिटिष शासन में सम्मिलित कर लिया गया। उन पर इस प्रकार के आरोप जैसे कि कुप्रषासन और सीमा से अधिक के ऋण के अभियोग लगाये जाते थे।[4]

जन साधारण और स्थानीय शासकों में अपमान की भावना विद्यमान थी। सिपाहियों ने भी अपमानित महसूस किया। सिपाहियों ने भी अपमानित महसूस किया। जब उनको यह ज्ञात हुआ कि नवप्रचलित ''एनफील्ड राइफलों'' की गोलियों पर गाय या सुअर की चर्बी लगी होती थी। इन कारतूसों को मुँह से खोलना पड़ता था। उन्होंने इस घटना को हिन्दू और मुसलमानों की जाति व्यवस्था को नष्ट–भ्रष्ट करने के रूप में लिया।[5] इन सब बातों के कारण 1857 का विद्रोह अनिवार्य हो गया।

प्रथम विद्रोह उन्नीसवीं रेजीमेंट द्वारा बैरकपुर बंगाल पर चर्बी लगी होने के कारण विद्रोह हुआ। इसी आधार पर ब्राह्मण मंगल पाँडे ने एक अंग्रेज को गोली मार दी तथा मेरठ में विद्रोह का झण्डा लहराया। मेरठ के विद्रोह में बहुत से यूरोपियों की हत्या हुई। सम्भल तहसील भी इस विद्रोह से प्रभावित हुई।[6]

विद्रोह के समय मिस्टर सी0बी0 साण्डर्स जिलाधिकारी थे। मिस्टर जे0जे0 कैम्पबेल संयुक्त मजिस्ट्रेट तथा जे0सी0 विल्सन मुरादाबाद के न्यायाधीष थे। जिलाधीष तथा संयुक्त मजिस्ट्रेट की नियुक्ति उसी समय हुई थी, लेकिन मिस्टर विल्सन यहाँ 1840 से थे।[7]

1857 की क्रान्ति मेरठ में प्रारम्भ होकर दिल्ली की ओर अग्रणी हुई। इस क्रान्ति का समाचार सम्भल में 13 मई 1857 को प्राप्त हुआ।[8]

क्रान्तिकारियों का उद्देष्य देष को अंग्रेजों से स्वतन्त्र कराने के साथ–साथ भारत में स्वतन्त्र सत्ता की स्थापना करना था। स्वतन्त्र सत्ता की स्थापना के लिए यह आवष्यक था कि किसी ऐसे व्यक्ति का चयन किया जाये जिस पर अधिकांष लोग सहमत हों। इसलिए मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर का चयन किया गया क्योंकि मुगल सम्राट के प्रति भारतवासियों की आस्था थी और अधिकांष लोगों ने इनका समर्थन किया। इस प्रकार उनके नेतृत्व में ये आन्दोलन आगे बढ़ा। उन्होंने जनरल बख्त खाँ को सम्भल भेजा।[9]

सम्भलवासियों को जब इसकी सूचना मिली कि मेरठ में अंग्रेजी फौज की दमनकारी नीति के आगे स्वतन्त्रता सैनिकों की शक्ति क्षीण होती जा रही है। उनको इस बात का खतरा हुआ कि जनरल बख्त खाँ को गजरौला में कहीं अंग्रेज शक्ति रोकने का प्रयास न करें। इसलिए हमें गजरौले के चौराहे पर पहले से ही जाकर कब्जा कर लेना चाहिए। अतः यहाँ से एक बड़ा बफद जिसका नेतृत्व मुंषी अमीनुद्दीन और नियादी शेख तुर्क कर रहे थे तो वह गजरौले की ओर रवाना हुआ। जनरल बख्त खाँ का स्वागत किया और उनको सम्मान सहित सम्भल की ओर लाया गया। उन्होंने सम्भल पहुँचने के लिए गजरौले और हसनपुर के बीच सिहाली नामक स्थान से कच्चे रास्ते के द्वारा प्रस्थान किया। वह गाँव गाँव होते हुए सम्भल की ओर चले। मार्ग में जनता ने उनका भव्य स्वागत किया और मालायें अर्पित की। इस स्वतन्त्रता के यज्ञ को कामयाब बनाने के लिए प्रचुर धन दिया गया। स्त्रियों ने अपने आभूषण तक भी अर्पित किये। इस प्रकार यह काफिला महमूदपुर के निकट तरंगो वाले बाग में पहुँचा, जो सम्भल से उत्तर की ओर तीन कि0मी0 दूर स्थित है।[10]

आज भी वह स्थान तरंगो वाले बाग के नाम से प्रसिद्ध है। यह बाग नियादी शेख तुर्क के वंषजों की सम्पत्ति है। उस जलसे के सभापति मुंषी अमीरूद्दीन साहब थे। यहाँ से काफिला मुरादाबाद की ओर रवाना हुआ और उसको मुरादाबाद से बरेली जाना था।[11]

रामपुर के नवाब, जो अंग्रेजो के पिठ्ठू और देषद्रोही थे। वह अपनी सेना लेकर मुरादाबाद आये। और रामगंगा नदी के किनारे युद्ध हुआ।[12] अंग्रेजी सेना भी बिजनौर की ओर से मुरादाबाद की ओर

प्रस्थान कर रही थी। यह खतरा पैदा हुआ कि मुरादाबाद नगर दो चक्की के पाटों में पिस जायेगा। इस आषंका ने सम्भल के स्वतन्त्रता सेनानियों को हतोत्साहित कर दिया।[13]

सात जून को बिलासपुर के मल्लाहों ने सम्भल में लूटपाट की। रामपुर के नवाब ने इस लूटपाट को रोकन के लिए सेना भेजी। सम्भल के साहूकारों ने लूटेरों की पैसों से सहायता की। ठाकुरद्वारा के पठानों तथा जुलाहों ने भी इस विद्रोह में भाग लिया। न्यायाधीष अजमत उल्लाह ने कोषागार तथा रिकार्ड को सुरक्षित रखा।[14]

इस प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की विफलता के पश्चात नियादी शेख तुर्क और मुंषी अमीरद्दीन साहब पर दोषारोपण किया गया। ये दोनों स्वतन्त्रता संग्राम की आग को भड़काने वाले थे। इन दोनों को सजा के रूप में मौहल्ला भट्टी मुरादाबाद में चूने के पानी में डुबोकर अंग्रेजों ने इनकी जान ले ली।[15]

अप्रैल 1858 को राजकुमार फिरोजषाह ने सम्भल पर अधिकार कर लिया। सम्भल में वह मुंषी इमामुद्दीन के निवास स्थान पर ठहरे।[16]

16 जून 1858 को रामपुर के नवाब की सहायता से अंग्रेजी कानूनों में आवष्यकतानुरूप सुधारात्मक परिवर्तन कर दिये गये। जिन लोगों ने इस संघर्ष में भाग लिया था उन्हें दण्डित किया गया जिन्होंने अंग्रेजो की सहायता की थी उन्हें राजा साहब, राय साहब, राय बहादुर, नवाब आदि उपाधियों से विभूषित किया गया।[17]

लाला चन्दू लाल सम्भल मुरादाबाद मार्ग पर स्थित ग्राम सिरसी के रहने वाले थे। वह महात्मा गाँधी जी से बहुताधिक प्रभावित थे। उन्होंने सम्भल तहसील के गाँव–गाँव में जाकर लोगों में जन जागृति की। उनका कार्य क्षेत्र 1920 में सम्भल तहसील और कार्य केन्द्र शंकर पाठषाला (षंकर भूषण शरण इन्टर कॉलेज, सम्भल) थी। इसमे चन्दू लाल जी अपनी गुप्त सभाँऐ करते थे। यदि पुलिस को पता चल जाता था तो वह वहाँ पहुँचकर सभा में विघ्न डालती थी और लाठी चार्ज भी करती थी। इन सभाओं में हाजी नुरूल हसन, मौलवी सुल्तान, डा0 चेतन स्वरूप रस्तौगी आदि ने भाग लिया।

1922 के असहयोग आन्दोलन में जिले में सबसे अधिक प्रभाव एवं उत्साह तहसील संभल में दिखाई दिया। किंग जार्ज यूनियन (के0जी0यू0) हायर सेकेंण्डरी स्कूल, (वर्तमान में हिन्द इण्टर कॉलेज के नाम से जाना जाता है) में रूप किषोर जी अध्यापक तथा मि0 षिप्ली प्रधानाध्यापक थे। मि0 षिप्ली का प्रयास था कि विद्यार्थियों में अंग्रेजी शासन विरोधी भावना जाग्रत नहीं हो। विद्यालय की एक प्रबंध समिति थी जिसके जिलाधिकारी संरक्षक, परगनाधिकारी तहसीलदार सम्भल तथा जिलाधिकारी द्वारा चार मनोनीत सदस्य थे। रूप किषोर जी असहयोग आन्दोलन में सक्रिय रहे तथा स्वदेषी अभियान में आन्दोलनरत रहते हुए विदेषी सामान का बहिष्कार और स्वदेषी सामान के प्रयोग पर बल दिया।[18] आन्दोलनकारियों ने इग्लैण्ड द्वारा निर्मित वस्त्रों को एकत्रित कर घंटाघर के सामने होली जलाई गयी। आन्दोलन में शामिल 5 लोगों को तुरन्त पुलिस ने गिरफ्तार किया। रूप किषोर जी को त्याग पत्र देने

के लिए बाध्य किया गया और सम्भल से उनको निष्कासित कर दिया गया। देहरादून में जाकर उनकी मृत्यु हो गयी।[19]

1930 में गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया और सम्भल के लोगों ने इसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया और यहाँ पर चार लोगों को गिरफ्तारी हुई। उन्ही दिनों गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह आन्दोलन भी प्रारम्भ किया। नमक कानून की अवज्ञा की गई और गैर कानूनी तरीके से सम्भल में नमक बनाया गया जिसके परिणाम स्वरूप ग्यारह (11) लोगों को गिरफ्तार किया गया।

1932 में ''पेषावर दिवस'' मुरादाबाद में इसलिए मनाया गया क्योंकि सरकार ने बर्बरता से पेषावर के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समर्थकों का कठोरता से अमन किया। सम्भल के 4 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

1937 के विधान सभा चुनाव में जिला 10 क्षेत्रों में विभाजित था जिसमें सम्भल भी शामिल था। इन क्षेत्रों में चार निर्दलीय तीन कांग्रेसी, तीन मुस्लिम लीग उम्मीदवार निर्वाचित हुए।

1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में सम्भल के लोगों ने अंग्रेजो के विरूद्ध बहुमत सक्रियता से भाग लिया जिनमें 22 लोगों को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया।

9 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन बहुत दृढ़ता से प्राम्भ हुआ। इस आन्दोलन में एक व्यक्ति जो भूरा नाम का था वह अंग्रेजो जैसा लगता था। यहाँ के स्वतन्त्रता सेनानी अब्दुल कय्यूम, अब्दुल सलाम, अब्दुल हक, चूड़ामणि आदि ने अंग्रेजो के हमषक्ल भूरे का मुँह काला कर तथा गधे पर सवार करके उससे कहलवाया कि ''आम्को मट मार आम चला जाना है''। पुलिस ने इस जलूस पर लाठी चार्ज किया जिसमें बषीर मियाँ शहीद हो गये और 12 लोगों को गिरफ्तार किया गया। यह घटना सम्भल में बाल विद्या मन्दिर के सामने की हैं।[20] स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों को गिरफ्तार करके उन पर मुकदमे चले। उन्हें कारावास और जुर्माने से दण्डित किया गया जिनमे मौहम्मद इस्माईल, चौ0 रियासत अली खान, रूप किषोर, चन्दूलाल, मौलवी सुल्तान अहमद, राम भरोसे, अब्दुल, अली बख्श, इमाम बख्श, डुली चन्द, नुरूल हसन, प्रहलाद, प्रहलाद कुमार, मुंषी मोइनुद्दीन, मौहम्मद बख्श, रघुनन्दन शर्मा, श्री सालिकराम, प्रेम सिंह, अब्दुल सलाम आदि।[21,22]

अमरोहा

अंग्रेजो की ''फूट डालो राज करो'' की नीति का अमरोहा पर कभी असर नहीं हुआ। यहाँ पर 1857 से भी पहले अंग्रेजी विरोधी भावना विद्यमान थी क्योंकि यहाँ की जनता में अटूट देषभक्ति की भावना थी। अमरोहा भी 1857 की क्रान्ति से अलग नहीं रहा। 1857 की क्रान्ति मेरठ में प्रारम्भ होकर दिल्ली होती हुई गढ़मुक्तेष्वर पार करके गजरौला पहुँची। अमरोहावासियों को जब इसकी सूचना मिली तो बहुत बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होकर गजरौला पहुँचे क्योंकि वे जनरल बख्त खाँ को अमरोहा लाना चाहते थे।[23]

यहाँ पर इस बात के लिए काफी विवाद हुआ और राजनीति रहस्यकारों के अनुसार यह निष्चित हुआ कि जनरल बख्त खाँ सम्भल होते हुए मुरादाबाद पहुँचे। यह क्रान्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण था।[24]

यह अमरोहा वालों की दरियादिली थी। उन्होंने अपनी भावनाओं को दबाकर उपरोक्त प्रस्ताव से सहमति की और वापसी में जोया नामक कस्बे में अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा की और हम बहादुर शाह जफर को सम्राट स्वीकार करते हैं तथा अंग्रेजो को सत्ता से बाहर कर देंगे।[25]

इस क्षेत्र में क्रान्ति का संचालन सैयद गुलजार अली तथा सैयद शब्बीर अली ने किया। यह दोनों वीर अमरोहा के निवासी थे। सैयद गुलजार अली मुरादाबाद कलेक्ट्रेट में मुख्तार थे। जब क्रान्तिकारियों ने मुरादाबाद जेल तोड़ दी, तो उसी रात कुछ कैदी तथा कुछ क्रान्तिकारी सैनिक लेकर अमरोहा पहुँचे।[26]

वहाँ इन्होंने शाह शर्फुद्दीन शाह विलायत की दरगाह में जनता की एक बैठक बुलाई, जिसमें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों सम्मिलित हुए। दूसरी बैठक शेख रमजान अली के मकान पर हुई। जनता ने सहर्ष क्रान्ति के पक्ष में अपना मत दिया, जिसके फलस्वरूप 20 मई 1857 को सैयद गुलजार अली के नेतृत्व में अमरोहा थाने पर धावा कर दिया गया। कई हजार आदमी उनके साथ थे। क्रान्तिकारियों ने थानेदार मदद अली तथा दीवान शामत खाँ को मार डाला। तहसील के खजाने से 17000 रूपये लूट लिये तथा आग लगा दी। अमरोहा नगर पर अधिकार कर लिया। जब मिस्टर विल्सन 25 मई को सेना सहित अमरोहा पहुँचे तो सैयद गुलजार अली तथा अन्य मुख्य क्रान्तिकारी भाग गए तथा गिरफ्तार न हो सके। मिस्टर विल्सन के आदेष से सैयद गुलजार अली का मकान तोड़कर नीचे गिरा दिया गया। अगले दिन मिस्टर विल्सन अमरोहा का प्रबन्ध गुरसहाय नामक एक जाट को सौंप कर मुरादाबाद वापस आ गए।[27]

सैयद गुलजार अली कब चुप बैठने वाल थे। 2 जून 1857 को जिले में ब्रिटिष राज्य समाप्त होते ही उन्होंने अमरोहा तथा आस–पास के इलाकों पर पुनः अधिकार कर लिया। उन्होंने मुगल बादषाह बहादुर शाह से भी सम्पर्क स्थापित किया तथा उन्होंने सैयद गुलजार अली को गवर्नर तथा सैयद शब्बीर अली को अमरोहा का नायब गवर्नर नियुक्त किया। उन्होंने अपने थानेदार, तहसीलदार तथा विभिन्न राजकीय विभागों में अपने ही क्लर्क नियुक्त किए। एक सेना भी बनाई। सिपाहियों को सुचारू रूप से सैनिक षिक्षा दी गई। प्रत्येक सिपाही के पास बाँस में लगा हुआ एक गंडासा था, जिसे सिपाही अपने कन्धों पर रख कर चलते थे।[28]

लोगों से कर तथा लगान भी वसूल किया जाता था। रामपुर के नवाब ने अमरोहा पर अधिकार करने के लिए सेना भेजी परन्तु जनता ने उनका साथ नहीं दिया। रामपुर के सैनिक अमरोहा के क्रान्तिकारियों से मिल गये। इस प्रकार गुलजार अली प्रषासन चलाते रहे तथा वे मुख्यतः सेना एवं सामान्य प्रषासन के इन्चार्ज थे परन्तु सैयद शब्बीर अली के पास दीवानी माल तथा न्याय विभाग थे। इनका शासन केवल एक वर्ष तक चला। जब अंग्रेजों ने मुरादाबाद पर अधिकार किया तो अमरोहा क्षेत्र भी नवाब रामपुर की सहायता से अपने अधिकार में ले लिया। सैयद गुलजार अली ने मुकाबला भी किया परन्तु परास्त हो गए।[29]

सैयद गुलजार अली अंग्रेजो के हाथ न आ सके तथा एक आष्चर्यपूर्ण ढ़ंग से अमरोहा से निकल भागे। अमरोहा नगर के चारों ओर पुलिस की चौकियाँ स्थापित कर दी थी ताकि क्रान्तिकारी लोग भाग न जाये। एक रात सैयद गुलजार अली सफेद चादर ओढ़कर और सफेद घोड़ी पर सवार होकर अमरोहा से भाग गये और लखीमपुर में जाकर उनकी मृत्यु हो गयी।[30]

वीर सैयद शब्बीर अली को अंग्रेजो ने पकड़ लिया। उन पर मुकदमा चला तथा अंग्रेजो ने उन्हें आजीवन दन्ड देकर काले पानी भेज दिया।[31]

कांग्रेस की महत्वपूर्ण गतिविधियाँ अमरोहे में 1920 के असहयोग आन्दोलन से प्रारम्भ हुई। अमरोहा की आम और रोहू मछली की बहार तो पहले से ही थी परन्तु स्वदेषी आन्दोलन की बहार भी यहाँ देखने योग्य थी। स्वदेषी आन्दोलन ने इस स्थान को तिरंगी बना दिया। यहाँ की जनता ने अपने–अपने घरों में से विदेषी सामान निकाल फेंका और इकट्ठा कर जला दिया। पुलिस ने जनता पर लाठीचार्ज की और गोलियाँ भी चलायी। इसी कारण यहाँ से 24 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया।[32]

गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया और ''नमक कानून'' की अवज्ञा की गई और गैर कानूनी तरीके से यहाँ पर नमक बनाया गया। यहाँ की पुलिस उच्चाधिकारियों के निर्देष पर नमक बनाने वाले लोगों को गिरफ्तार करना चाहती थी और यहाँ से 23 लोगों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस जब इन लोगों को गिरफ्तार करके अपने वाहन से मुरादाबाद ले जा रही थी तो उस समय अमरोहे के लोगों का बड़ा हुजूम थाने के पीछे एकत्रित हो गया क्योंकि ये लोग उन सेनानियों के दर्षन करना चाहते थे। उसी समय थाने मे मौजूद उच्चाधिकारियों ने तुरन्त चालक को गाड़ी चलाने का आदेष दिया और जनता के आग्रह को नहीं माना। उनका अनुमान था कि जनता गाड़ी चलने पर स्वयं हट जायेगी परन्तु हरवंष लाल का पुत्र रतन लाल अपने प्राणों की परवाह न करके वाहन के सामने लेट गया और वाहन उसके ऊपर से गुजर गया। चौदह दिन बाद उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी उम्र 20 वर्ष थी। वह अमरोहा शहर के बटवाल बाजार का निवासी था। नगरपालिका परिषद ने उस शहीद के बलिदान की स्मृति में कोट चौराहे से बटवाल बाजार के मार्ग का नाम ''शहीद रतन लाल मार्ग'' रखा।[33]

सरकार ने बर्बरता से पेषावर के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समर्थकों का कठोरता से दमन किया। इसलिए 1932 में पेषावर दिवस मनाया गया जिसमें अमरोहा के लोग भी शामिल हुए और लगभग 6 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

1937 के विधान सभा चुनाव में अमरोहा भी मुरादाबाद जिले में शामिल था।

1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में अमरोहा से 27 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

9 अगस्त 1942 को ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' बहुत दृढ़ता से प्रारंभ हुआ। दो दिन पश्चात लगभग 40 लोगों ने जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों सम्मिलित थे कचहरी की ओर चलना प्रारम्भ किया। तब पुलिस ने उन्हें रोकने का बलपूर्वक प्रयास किया तथा लाठीचार्ज किया जिससे स्थिति अनियन्त्रित हो गयी। इस घटना में कुछ लोग घायल हुए और 17 लोगों को गिरफ्तार किया गया।[34]

स्वतन्त्रता आन्दोलन में अब्दुल करी, जमील अहमद, नरोत्तम शरण, नाथूराम वैद्य, बाबू राम, रफीक अहमद, वलीउल्ला बेग, शफीकुल हसन, अब्दुल हक, इनामुलहक, अंगीर सिंह, कूड़े सिंह, खलील अहमद खाँ, गोविन्द राम, चाँद बिहारी, बुद्ध सैन जैन, मजीद आदि को गिरफ्तार किया गया।[35]

1- *Mehta, Ashok : 1857, The Great Rebellion, PP 26-30.*
2- *Ibid,*
3- *Chandra, Vipin : Bharat ka Swatantrata Sangharsh P-6.*
4- *आर.एल.शुक्ला : आधुनिक भारत का इतिहास पृष्ठ 121.*
5- *बी.एल.ग्रोवर एवं यषपाल : आधुनिक भारत का इतिहास पृष्ठ 192.*
6- *Rizvi, S.A.A. : Freedom Struggle in Uttar Pradesh Vol. V, P-234.*
7- *बी.एस.भटनागर : मुरादाबाद के इतिहास की एक झलक, पृष्ठ 39.*
8- *E Alexander : Final Report on the settlement of the Moradabad District (Allahabad, 1881), PP-16,17.*
9- *हम्माद अहमद : तारीख–ए–आजादी और जिला मुरादाबाद पेपर नम्बर–3.*
10- *हम्माद अहमद : पृष्ठ 3*
11- *उपरोक्त : पृष्ठ 4*
12- *उपरोक्त : पृष्ठ 4*
13- *उपरोक्त :*
14- *बी0एस0 भटनागर : पृष्ठ 43.*
15- *हम्माद अहमद : पृष्ठ 5.*
16- *बी0एस0 भटनागर : पृष्ठ 44.*
17- *सूचना विभाग उत्तर प्रदेष : स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ 48.*
18- *मासिक पत्रिका हिन्द इन्टर कालेज पृष्ठ नं0 81.*
19- *उपरोक्त*
20- *अलजमीयत दैनिक दिल्ली पृष्ठ 2*
21- *राष्ट्रीय सहारा मुरादाबाद की जंगे आजादी नम्बर दिल्ली पृ0 701.*
22- *सूचना विभाग उत्तर प्रदेष : स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ 63.*
23- *E Alexander : Final Report on the settlement of the Moradabad District (Allahabad, 1881), PP-16,17.*
24- *हम्माद अहमद : पृष्ठ 3.*
25- *उपरोक्त*
26- *बी0एस0 भटनागर : पृष्ठ 45.*
27- *उपरोक्त : पृष्ठ 45.*
28- *उपरोक्त : पृष्ठ 46.*
29- *उपरोक्त : पृष्ठ 46.*
30- *उपरोक्त : पृष्ठ 48.*
31- *उपरोक्त : पृष्ठ 48.*
32- *जनपद स्मारिका : पृष्ठ 8.*
33- *Nevil H.R. : The Gazetter of District Moradabad 1911.*
34- *Gazettier of Moradabad : Information Department U.P.*
35- *सूचना विभाग उत्तर प्रदेष : स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, पृष्ठ 48.*